समाजशास्त्र का अध्ययन-क्षेत्र (Scope of Sociology)

समाजशास्त्र की परिभाषा से स्पष्ट होता है कि समाजशास्त्र के अध्ययन-क्षेत्र को दो प्रकार से स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है:

(क) एक विचारधारा यह है कि समाजशास्त्र एक विशेष विज्ञान है। इस प्रकार समाजशास्त्र में केवल कुछ विशेष प्रकार के सम्बन्धों का ही अध्ययन किया जाना चाहिए।

(ख) दूसरी विचारधारा के अनुसार, समाजशास्त्र एक सामान्य विज्ञान है। इस प्रकार इसके अन्तर्गत सभी सामान्य सम्बन्धों का अध्ययन होना चाहिए। इन विचारधारा को हम क्रमशः स्वरूपात्मक सम्प्रदाय (Formal School) तथा समन्वयात्मक सम्प्रदाय (Synthetic School) की विवेचना द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं।

(1) स्वरूपात्मक सम्प्रदाय (Formal School)
(समाजशास्त्र एक विशेष विज्ञान के रूप में)

इस सम्प्रदाय के समर्थकों में सिमेल, वेबर, टॉनीज और वॉनविज आदि प्रमुख हैं। इनका मत है कि समाजशास्त्र अभी एक नया विज्ञान है। इस स्थिति में यदि हम समाजशास्त्र के अन्तर्गत सभी प्रकार के सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन करने लगेंगे तो इसका वैज्ञानिक रूप से अध्ययन करना बहुत कठिन हो जायेगा। दूसरी बात यह है कि समाजशास्त्र को एक स्वतंत्र विज्ञान बनाना आवश्यक है।

ऐसा हम तभी कर सकते हैं जब समाजशास्त्र में केवल उन्हीं सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन किया जाय जिनका अध्ययन किसी दूसरे सामाजिक विज्ञान में नहीं किया जाता। स्वरूपात्मक सम्प्रदाय के इसी दृष्टिकोण का इसके समर्थकों ने भिन्न-भिन्न रूप में समझाने का प्रयास किया है।

(1) जार्ज सिमेल का विचार—

जार्ज सिमेल (George Simmel) का विचार है कि प्रत्येक वस्तु का एक 'स्वरूप' (Form) होता है और इस स्वरूप के अन्दर एक 'अन्तर्वस्तु' (Content) अथवा कुछ तथ्य होते हैं। इस दृष्टिकोण से सामाजिक सम्बन्धों को भी स्वरूप अथवा अन्तर्वस्तु जैसे दो मुख्य भागों में विभाजित किया जा सकता है। समाजशास्त्र में हम केवल सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूपों का अध्ययन करते हैं अन्य तथ्यों का नहीं। अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए सिमेल का कथन है कि (क) समाजशास्त्र एक 'विशेष विज्ञान' है। इस कारण इसका अपना एक पृथक् क्षेत्र तथा पृथक् दृष्टिकोण होना आवश्यक है। (ख) सामाजिक सम्बन्धों का एक 'स्वरूप' होता है और दूसरी 'अन्तर्वस्तु'। (ख) सामाजिक सम्बन्धों का एक 'स्वरूप' होता है और दूसरी 'अन्तर्वस्तु'। उदाहरण के लिए, प्रतिस्पर्द्धा सामाजिक सम्बन्ध का एक विशेष उदाहरण है जिसका एक 'स्वरूप' होता है और इसकी एक अन्तर्वस्तु होती है।